पशुपालक मित्र

पशुपालन को समर्पित त्रिमासिक पत्रिका

वर्ष: 2 अंक : 2 अप्रैल, 2022 कुल पृष्ठ:16 **ISSN: 2583-0511(Online)**

Visit us: www.pashupalakmitra.in

पशुपालक मित्र

पशुपालन को समर्पित त्रिमासिक पत्रिका ISSN: 2583-0511(Online)

संपादकीय पैनल

प्रधान संपादक

डॉ. सतीश कुमार पाठक
असिस्टेंट प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

संपादक

पशु प्रजनन एवं मादा रोग विशेषज्ञ

1. डॉ.आशुतोष त्रिपाठी
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   स.व.प. कृषि वि.वि., मेरठ
2. डॉ. विकास सचान
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   दुवासू , मथुरा

पशु पोषण विशेषज्ञ

1. डॉ. दिनेश कुमार
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   जे.एन.के.वि.वि., जबलपुर
2. डॉ. संदीप कुमार चौधरी
   असिस्टेंट प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन विशेषज्ञ

1. डॉ. ममता
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   दुवासू , मथुरा
2. डॉ. अजीत सिंह
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
3. डॉ. विपिन मौर्य
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

पशु औषधि विशेषज्ञ

1. डॉ. नीरज ठाकुर
   असिस्टेंट प्रोफेसर
   काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

वर्ष:2 अंक: 2 अप्रैल, 2022

क्रमांक	लेख का शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	**पशुओं की विभिन्न अवस्थाओं में उत्तम प्रबंधन की वैज्ञानिक विधियां** : डॉ. संजय कुमार मिश्र एवं डॉ. विकास सचान	3-6
2.	**पशुओं में एस्केरिओसि रोग, उपचार एवं बचाव** :डॉ. संजय कुमार मिश्र एवं डॉ. अरविंद कुमार त्रिपाठी	7-9
3.	**पशुओ को यूरिया-मोलासेस उपचारित चारा खिलाये:** डॉ. राजेश नेहरा	10-11
4.	**गर्भाशय, सर्विक्स या गर्भाशय ग्रीवा एवं योनि का प्रोलैप्स (शरीर निकालना) कारण एवं निवारण :** डॉ. संजय कुमार मिश्र, डॉ. विकास सचान एवं डॉ. सर्वजीत यादव	12-13
5.	**दूधारू पशुओं के लिए ग्रीष्मकालीन पोषण प्रबंधन और देखभाल:** डॉ. प्रमोद कुमार सोनी	14-15

नोट: लेख में वर्णित सूचनाओं का दायित्व लेखक का होगा, संपादक का नही ।

Visit us: www.pashupalakmitra.in

संपर्क सूत्र

प्रधान संपादक
डॉ. सतीश कुमार पाठक,
असिस्टेंट प्रोफेसर,
पशुशरीर रचना शास्त्र विभाग , पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान संकाय,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय,
बरकछा, मिर्जापुर-231001, उत्तर प्रदेश

ईमेल आई डी:
pashupalakmitra1@gmail.com

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

पशुओं की विभिन्न अवस्थाओं में उत्तम प्रबंधन की वैज्ञानिक विधियां

डॉ. संजय कुमार मिश्र[1] एवं डॉ. विकास सचान[2]

1. पशु चिकित्सा अधिकारी, पशुपालन विभाग, उत्तर प्रदेश
2. सहायक आचार्य, मादा पशु रोग एवं प्रसूति विज्ञान विभाग, दुवासु, मथुरा, उत्तर प्रदेश

पशुपालन कृषि का एक अभिन्न अंग है जो देश की अर्थव्यवस्था में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पशुपालन में कृषि उत्पादों का समुचित उपयोग होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में लघु एवं सीमांत किसानों एवं खेतिहर मजदूरों को पशुपालन से पूरे वर्ष रोजगार उपलब्ध होता है। हमारे देश में घटती कृषि योग्य भूमि बढ़ती आबादी व बेरोजगारी के समस्याओं के समाधान हेतु पशुपालन व्यवसाय का बहुत ही महत्व है। इसके लिए यह आवश्यक है कि किसानों को पशुओं की उत्तम रखरखाव एवं प्रबंधन की वैज्ञानिक विधियों का ज्ञान भली-भांति हो जिससे अधिकतम उत्पादन प्राप्त किया जा सके।

1. गर्भित पशुओं की देखभाल एवं उचित प्रबंधन:

गर्भित पशुओं को बच्चा देने से 3 महीने पूर्व अन्य पशुओं से अलग कर देना चाहिए। उसके रखरखाव एवं खानपान पर विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि इस अवस्था में गर्भ में बच्चे की उचित विकास के साथ-साथ मादा अधिक दूध उत्पादन के लिए अपने आपको तैयार करती है। गर्भित पशुओं को डराना, धमकाना, दौड़ाना, मारना आदि क्रियाएं नहीं करनी चाहिए अन्यथा की स्थिति में गर्भपात होने का खतरा हो सकता है। गाभिन पशुओं को लड़ाकू पशुओं से अलग रखना चाहिए। गाभिन पशुओं को ब्याने के 2 महीने पहले दूध निकालना धीरे-धीरे बंद कर देना चाहिए ताकि अयन को आराम मिल सके तथा गर्भ में पल रहे बच्चे का समुचित विकास हो सके। इस अवस्था के दौरान मादा अपने शरीर की भरपाई करती है तथा वजन में वृद्धि करती है।

2. पशुओं का प्रसव के दौरान समुचित प्रबंधन:

पशुओं के प्रसव के दौरान उनके समीप किसी प्रकार का शोर शराबा नहीं होना चाहिए इससे पशु डर जाता है एवं ब्याने की स्वाभाविक क्रिया में बाधा उत्पन्न होती है। प्रतिक्रिया आरंभ होने का सबसे मुख्य लक्षण है कि पशु के योनि मार्ग से श्लेष्मा निकलना और अशांत रहना। ऐसे समय पशु को अनावश्यक नहीं छेड़ना चाहिए। इस समय योनि द्वार से पानी की थैली बाहर निकलती है जिसे अपने आप ही फटने दें। बच्चा पहले सामने के पैरों पर सिर रखकर टिकी हुई अवस्था में बाहर आता है।

यदि प्रसव स्वाभाविक रूप से 3 से 4 घंटे में ना हो तो किसी भी पंजीकृत पशु चिकित्सक की सहायता लेनी चाहिए। प्रसव के बाद योनि द्वार, पूछ तथा पीछे के आसपास के हिस्सों को गुनगुने पानी में पोटेशियम परमैंगनेट के 0.1 प्रतिशत घोल से साफ कर दे। सामान्यता जेर 4 से 6 घंटे में बाहर निकल जाता है परंतु यदि जेर 12 घंटे तक अपने आप ना निकले तो योग्य पशु चिकित्सक की सहायता लेनी चाहिए। जेर को पशु खा सकता है अतः किसी स्थान पर गड्ढे में गढ़वा दे। यदि पशु जेर खा जाए तो उसे अपच हो जाएगा और उसका दुग्ध उत्पादन भी कम हो जाएगा। ब्याने के तुरंत बाद पशु को गुड़ या शीरा गुनगुने पानी में घोलकर खिलाना चाहिए एवं आसानी से पचने वाला दस्तावर चारा दाना 3 से 5 दिनों तक खिलाना चाहिए। उसके पश्चात धीरे-धीरे 7 से 10 दिन में उसे सामान्य आहार में लाना चाहिए। प्रसव के बाद पहली बार पशुओं के थन से पूरा दूध नहीं निकालना चाहिए क्योंकि पूरा दूध निकालने से अधिक दूध देने वाले पशुओं को मिल्क फीवर होने का भय रहता है। दूध निकालने से पहले स्थान व शरीर की मौसम के अनुसार ताजी व गर्म पानी से सफाई करनी चाहिए। बच्चा देने वाले स्थान पर फिनायल अथवा एंटीसेप्टिक घोल का छिड़काव कर सफाई करनी चाहिए। नवजात बच्चे को कम से कम 10 दिन तक अन्य पशुओं से अलग रखना चाहिए। बच्चा दिए हुए पशुओं को खुले स्थान पर रखना चाहिए ताकि उन्हें ताजी हवा मिल सके। परंतु सर्दियों में पशु एवं नवजात शिशु को ठंडी हवाओं से बचाएं और धूप निकलने पर ही बाहर निकालना चाहिए।

3. **नवजात शिशु की देखभाल:**

नवजात शिशु की देखरेख उसके जन्म से पूर्व ही माता के गर्भ से शुरू हो जाती है। इसलिए पशु के ब्याने के 3 महीने पहले से ही उनको आवश्यकतानुसार समुचित चारा दाना देना चाहिए। नवजात पशु के नाक तथा मुंह से श्लेष्मा को निकाल देना चाहिए जिससे कि वह सामान्य रूप से सांस ले सकें। यदि बच्चा सामान्य रूप से सांस न ले रहा हो तो पिछले घुटने पकड़कर उल्टा लटका देना चाहिए ताकि श्लेष्मा अपने आप बाहर निकल जाए या नाक में घास की पत्ती डालने से पशु छींकने लगता है और श्लेष्मा नाक से बाहर निकल आती है। इसके पश्चात बच्चे को उसकी मां के पास छोड़ देना चाहिए। साधारणतया मां बच्चे को चाट कर उसे साफ एवं सूखा कर देती है। यदि माता बच्चे को नहीं चाटती है तो बच्चे को किसी मोटे कपड़े या साफ बोरी से रगड़ कर साफ़ करें तथा सुखाएं। नवजात बच्चे के शरीर पर थोड़ा सा नमक छिड़कने से पशु बच्चे को चाटना शुरू कर देता है। शरीर चाटने से बच्चे को सांस लेने में सहायता मिलती है। अक्सर नाभि सूत्र अपने आप टूट जाती है। वहां पर टिंक्चर आयोडीन अवश्य लगाएं। यदि नाभि सूत्र जुड़ी हुई हो तो उसे नई ब्लेड से 3 से 5 इंच रखकर काट दें और स्वच्छ धागे से बांध कर उस पर टिंचर आयोडीन लगाएं जिससे किसी तरह की बीमारी बच्चे को न लग पाए। टिंचर आयोडीन 1 सप्ताह तक लगाते रहे। नवजात बच्चे को जन्म के तुरंत बाद ही खींस पिलानी चाहिए।

नवजात बच्चा यदि अपने आप खड़ा नहीं होता है तो उसे सहारा देकर खड़ा करें तथा मां के थन के पास ले जाकर दो चार बार कोलोस्ट्रम को उसके मुंह में दें जिससे कि उसे खीस अर्थात कोलोस्ट्रम का स्वाद मिले और वह अपनी मां के थन से ठीक से कोलोस्ट्रम पीने लगे। कोलोस्ट्रम पिलाना अति आवश्यक है क्योंकि इसमें गामाग्लोबलिन होता है जो कि नवजात बच्चों को विभिन्न प्रकार की बीमारियों से सुरक्षा प्रदान करता है अर्थात जीवन पर्यंत के लिए रोग प्रतिरोधक क्षमता उत्पन्न करता है। परंतु कोलोस्ट्रम आवश्यकता से अधिक नहीं पिलाना चाहिए। इसे दिन में तीन से चार बार उसके शारीरिक वजन के दसवीं भाग की दर से खिलाना चाहिए।

कोलोस्ट्रम पिलाने के 4 से 6 घंटे के अंदर बच्चों का मल विसर्जन अपने आप हो जाता है। यदि किसी कारणवश ऐसा नहीं हो तो आधा चम्मच अरंडी का तेल पिलाना चाहिए।

नवजात बच्चों को ठंडी हवा व खराब मौसम से बचाएं तथा गर्म स्थान में रखें जिससे कि उसे निमोनिया ना हो परंतु उसके रखने का स्थान साफ-सुथरा व हवादार तथा फर्श पर बिछावन अवश्य होना चाहिए। जब बच्चा 8 से 10 दिन का हो जाए तो उसे सूखा भूसा हरा चारा खिलाएं इससे बच्चे को कब्ज नहीं होती है व पाचन सही रहता है।

जब बच्चा लगभग 15 दिन का हो जाए तो उसे अंता क्रमी नाशक औषधि पान कराएं इससे बच्चा स्वस्थ रहेगा तथा वृद्धि अच्छी होगी। जब बच्चा 3 से 4 माह का हो जाए तो उसे छूत की बीमारियों के टीके अवश्य लगवाने चाहिए।

जब बच्चा एक माह का हो जाए तो उसे प्रतिदिन 100 ग्राम संतुलित पशु आहार देना शुरू करें। दूसरे महीने से 200 ग्राम तीसरे महीने से 300 ग्राम चौथे महीने से 400 ग्राम पांचवे महीने से 700 ग्राम छठे महीने से 1 किलोग्राम संतुलित पशु आहार प्रतिदिन देना चाहिए। संतुलित पशु आहार 2 वर्ष की अवस्था तक लगभग 1 किलोग्राम प्रति दिन देना चाहिए।

समय-समय पर छूत की बीमारियों से बचाव हेतु सुरक्षात्मक टीका लगवाना चाहिए। 2 से 3 वर्ष की अवस्था में पशुधन बीमा करवाएं। गर्भित होने की अवस्था में पहले 3 माह पर आहार की मात्रा डेढ़ किलोग्राम पर दिन 4 से 7 माह तक 2 किलोग्राम प्रति दिन इसके पश्चात बच्चा देने तक 3 किलोग्राम प्रति दिन आहार खिलाना चाहिए।

4. **दुधारू पशुओं का प्रबंधन:**

दुधारू पशुओं के रहने का स्थान साफ सुथरा एवं हवादार होना चाहिए। अधिक सर्दी गर्मी वर्षा से बचाव हेतु उपाय अत्यंत आवश्यक है। पशुशाला में सप्ताह में एक बार फिनाइल का छिड़काव अवश्य करें जिससे पशुशाला का फर्श रोगाणु रहित रहे। इस प्रकार सफाई रखने से स्वच्छ दुग्ध उत्पादन में सहायता मिलती है। पशुओं को मौसम के अनुसार नहलाना चाहिए। इससे धूल बाल गंदगी जुए कलीले आज साफ हो जाते हैं तथा शरीर में लगे चोट जख्म का पता लग जाता है जिससे इनका उपचार समय से हो जाता है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

पशुओं को नियमित रूप से उसके शरीर व दूध के मुताबिक संतुलित पशु आहार से खिलाए। दूध दुहने में लगभग 12 घंटे का अंतर रखें इससे दूध की मात्रा एवं संरचना में अधिक परिवर्तन नहीं आएगा। दूध का दुहान करते समय सूखा चारा न खिलाएं क्योंकि हवा चलने पर वह दूध में गिरेगा। दुधारू पशुओं हेतु 12 महीने हरे चारे का प्रबंध रखना चाहिए इससे पशुओं की चराई पर लागत कम आती है तथा दुग्ध उत्पादन भी बढ़ता है। दुधारू पशुओं को छूत की बीमारियों से बचाव हेतु समय समय पर टीकाकरण अवश्य करवाना चाहिए। पशुओं के बीमार होने पर पंजीकृत पशुचिकित्सक को दिखाएं। ऐसा करने से कम लागत पर पशु स्वस्थ अधिक दूध उत्पादन देता है। पशुओं को व्यायाम मिल जाता है तथा स्वस्थ रहते हुए उनसे अधिक दुग्ध उत्पादन के साथ-साथ पशुशाला की सफाई अच्छी रहती है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

पशुओं में एस्केरिओसि रोग, उपचार एवं बचाव

डॉ. संजय कुमार मिश्र[१] एवं डॉ. अरविंद कुमार त्रिपाठी[२]

१. पशु चिकित्सा अधिकारी मथुरा उत्तर प्रदेश
२. सहआचार्य पशु औषधि विज्ञान विभाग दुवासु मथुरा उत्तर प्रदेश

इस बीमारी को गोल कृमि बीमारी भी कहते हैं। यह बड़े व छोटे पशुओं का एक प्रमुख परजीवी रोग है। लंबे व गोल एस्केरिस संख्या में अत्याधिक वृद्धि कर आंत एवं पित्त की थैली की नली को पूरी तरह अवरुद्ध कर देते हैं, जिससे कभी-कभी छोटी आंत फट भी सकती है। इस रोग से पशु अत्यंत कमजोर हो जाते हैं। कम उम्र के रोगी बछड़ों व कटड़ों में वृद्धि दर बहुत कम हो जाती है।

जीवन चक्र:

नियोएस्केरिस बिटुलोरम नामक परजीवी गाय भैंसों की आंतों में पाया जाने वाला सबसे बड़ा परजीवी है।
सभी एस्केरिस का जीवन चक्र लगभग एक सा ही होता है परंतु सिर्फ नियो एस्केरिस कोलोस्ट्रम एवं गर्भाशय द्वारा फैलता है। वयस्क एस्केरिस रोगी पशु की आंत में 2 से 5 वर्ष तक जीवित रह जाते हैं। रोगी शरीर में यह प्रतिदिन हजारों की संख्या में अंडे देते हैं। नर व मादा अलग-अलग होते हैं। अंडे गोबर के साथ बाहर निकलते रहते हैं। बाहर सर्दी, गर्मी का इन पर कोई असर नहीं होता है तथा यह वर्षों तक जीवित रहते हैं, लेकिन रेतीले क्षेत्र में जब तेज सीधी धूप से यह कुछ सप्ताहों में नष्ट हो जाते हैं। इन्हीं अंडों से दूषित चारा, पानी आदि को ग्रहण करने से स्वस्थ पशु भी रोग ग्रस्त हो जाते हैं।
वयस्क एस्केरिस-छोटी आंत-अंडे-खाद्य पदार्थों एवं पानी का संक्रमण-पोसद /होस्ट के द्वारा ग्रहण कर लिए जाते हैं -छोटी आंत में इन लारवा का विकास होता है-हैचिंग अर्थात अंडे से लारवा बाहर निकल आता है-
जहां से पोर्टल शिरा द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है- यकृत और फेफड़ों में-यकृत को छतिग्रस्त करता है-फेफड़ों -ब्रोंकाइ-ट्रेकिया-फैरिंक्स-छोटी आंत द्वारा निगल लिया जाता है। (कुल अवधि 8 से 9 सप्ताह)

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

पैथोजेनेसिस:

रोग के लक्षण आंतों की दीवारों में दिखाई पड़ते हैं। बड़े आकार के वयस्क एस्केरिस, आंतों में संख्या में वृद्धि कर गुच्छे का रूप धारण कर लेते हैं और आंत में रुकावट कर पूरी तरह बंद कर देते हैं। यहां से एस्केरिस के लारवा जब भ्रमण कर यकृत एवं फेफड़ों में पहुंच जाते हैं तो वहां भी अत्यंत नुकसान पहुंचाते हैं। यकृत में यह फाइब्रोसिस पैदा करते हैं जिससे लिवर पर जगह-जगह सफेद धब्बे से बन जाते हैं।

लक्षण:

गो वंशीय एवं महिश वंशीय-

*बच्चों में दस्त पेट दर्द व सुस्ती।
*रूखी त्वचा पशु की कम वृद्धि दर तथा बछड़े व कटडें मुरझाए हुए लगते हैं।
*शरीर में परजीवियों की संख्या अधिक होने पर पेट दर्द एवं तड़पना इत्यादि।
*भैंस के बच्चों में अत्याधिक मृत्यु दर पाई जाती है।

अश्ववंशीय-

*घोड़ी के बछेड़ों में गाय के बछड़ों जैसे ही लक्षण होते हैं, परंतु बड़े घोड़ों में एस्केरिस पेरीटोनियल कैविटी में भी पाए जा सकते हैं जिससे उन्हें पेरीटोनाइटिस हो सकती है। कम वृद्धि दर , दस्त तथा पेट दर्द होता है।

निदान:

*लक्षणों के आधार पर।
*एस्केरायसिस कम उम्र के पशुओं में अधिक होता है।
*कम वृद्धि दर तथा रूखी त्वचा।
*#सूक्ष्मदर्शी में गोबर के परीक्षण में वयस्क व अंडे दिखाई देते हैं।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

उपचार:

***पिपराजीन** बहुत ही महत्वपूर्ण प्रभावी उपचार है। इसे 100 से 400 मिलीग्राम प्रति किलो ग्राम शरीर भार के अनुसार अश्ववंशीय एवं गो वंशीय तथा महिश वंशीय पशुओं में देते हैं।

***वरमैक्स**-
भेड़, बछड़ा, और बछेड़ों मैं 1ml प्रति 2.5 किलोग्राम शरीर भार के अनुसार कुत्ते और बिल्ली में 1ml प्रति 4.5 किलोग्राम शरीर भार के अनुसार देते हैं।

***लेवामिसाल**-
10 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम शरीर भार।

***थायाबेंडाजॉल**-बड़े पशुओं के लिए यह अत्याधिक उपयुक्त है। 80 से 100 ग्राम प्रति किलोग्राम शरीर भार के अनुसार देना चाहिए।

***मीबेनडाजाल:**
500 मिलीग्राम प्रति 100 किलोग्राम शरीर भार के अनुसार देते हैं।

बचाव:

*गोबर का अच्छी तरह निस्तारण घर से दूर करें।
*छोटे बछड़ों, बछेड़ों व कटडों को बड़ी उम्र के पशुओं से अलग रखें।
*गर्भित पशु में एस्केरिस नहीं हो इसके लिए गर्भकाल के दौरान उचित समय पर उपयुक्त क्रमी नाशक औषधि दिलाएं।

उपरोक्त औषधियों का प्रयोग करने से पूर्व पंजीकृत पशु चिकित्सा अधिकारी से सलाह अवश्य ले लें।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

पशुओ को यूरिया-मोलासेस उपचारित चारा खिलाये

डॉ. राजेश नेहरा

सहायक आचार्य
पशु पोषण विभाग , राजुवास , बीकानेर

श्रेष्ठ नस्ल के पशु को अनुकूलित वातावरण में रखकर संतुलित आहार दिया जाये तो अधिकतम उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है | पशुपालन के कुल खर्च का लगभग 70% भाग पशु आहार पर खर्च किया जाता है | राजस्थान की शुष्क जलवायु और अकाल की समस्या के कारण पशुओ के लिए वर्षभर हरा चारा उपलब्ध नहीं हो पाता है, एवं जो सुखा चारा उपलब्ध होता है उसकी पोष्ठिकता कम होती है और अधिक उत्पादन वाले पशुओ में पोषक तत्वों की पूर्ति नहीं हो पाती है तथा पशु कमजोर व रोगग्रस्त हो जाते है | पशुपालन आजीविका का प्रमुख स्रोत होने के कारण संतुलित आहार देने के लिए यूरिया-मोलासेस उपचारित चारे का प्रयोग किया जा सकता है | ज्यादातर पशुपालक सूखे चारे, तुड़ी, बेरी-पाला, भूसा, खाखला, कड़बी इत्यादि का प्रयोग करते है जिनसे पशुओ को ऊर्जा, प्रोटीन एवं खनिज लवण प्राप्त नहीं हो पाते तथा उत्पादन में कमी आती है |

पशुपालको को प्रशिक्षित कर यूरिया-मोलासेस ब्लाक तैयार करवा कर पशुओ को चाटने के लिए दिए जा सकते है | यूरिया मोलासेस ब्लाक ऊर्जा, प्रोटीन, खनिज लवण के उत्तम स्रोत है जिसे उचित मात्रा में प्रयोग कर अमोनिया विषाक्तता का खतरा टाला जा सकता है क्योकि चाटने से पशु के शरीर में धीरे धीरे यूरिया नाइट्रोजन को विसर्जित करते है |

यूरिया मोलासेस उपचारित चारे का पशु के शरीर में उपापचय :-

यूरिया मोलासेस उपचारित चारा प्रोटीन, नाइट्रोजन का प्रमुख स्रोत है जिसमे पर्याप्त मात्रा में ऊर्जा , खनिज लवण व् विटामिन होते है | जुगाली करने वाले पशु के रुमन (पेट) में सूक्ष्म जीव बैक्टीरिया , प्रोटोजोआ, कवक इत्यादि होते है, इनके लिए मोलासेस ऊर्जा का प्रमुख स्रोत है, साथ ही यूरिया पशु के रुमन (पेट) में हाइड्रोलायसिस से अमोनिया में परिवर्तित हो जाता है जो इन सूक्ष्म जीवो के लिए नाइट्रोजन का प्रमुख स्रोत होता है इससे सूक्ष्म जीव उच्च गुणवता की माइक्रोबियल प्रोटीन बनाते है जो पशुओ के काम आती है |

यूरिया मोलासेस उपचारित चारे के प्रमुख संघटक :-

प्रति 100 किलोग्राम चारे हेतु

यूरिया - 2 किलो मोलासेस या शीरा / गुड - 10 किलो

पानी - 10 किलो खनिज तत्व - 1 किलो नमक - 1 किलो

यूरिया मोलासेस उपचारित चारे के निर्माण की विधि :-

1. सबसे पहले 2 किलो यूरिया को 10 किलो पानी में घोल ले |
2. इस घोल को 10 किलो मोलासेस में डालकर अच्छी तरह मिश्रित कर ले |
3. अब इसमें 1 किलो नमक और 1 किलो खनिज तत्व मिला ले, यह मिश्रण 100 किलो चारे के लिए पर्याप्त है |
4. सूखे चारे को छोटे छोटे टुकडो में कट लेवे तथा दो से तीन इंच की परत में फैला ले |
5. अब सूखे चारे पर मिश्रण या घोल का आधा भाग छिड़क कर 30 मिनट तक सूखने देवे, जिस से घोल चारे पर चिपक जाये |
6. अब चारे को उल्टा पुल्टा कर शेष बचे आधे मिश्रण का भी छिडकाव कर देवे |
7. इसे अच्छी तरह से सुखा कर इसका भण्डारण कर लेवे |

इसके बाद पशुओ को आवश्यकता के अनुसार खिलाया जा सकता है |

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

गर्भाशय, सर्विक्स या गर्भाशय ग्रीवा एवं योनि का प्रोलैप्स (शरीर निकालना) कारण एवं निवारण

डॉ. संजय कुमार मिश्र,[१] डॉ. विकास सचान[२] एवं डॉ. सर्वजीत यादव[३]

१. पशु चिकित्सा अधिकारी पशुपालन विभाग मथुरा उत्तर प्रदेश
२. सहायक आचार्य मादा पशु रोग एवं प्रसूति विज्ञान विभाग दुआसू मथुरा उत्तर प्रदेश
३. निदेशक प्रसार दुवासु मथुरा उत्तर प्रदेश

गर्भाशय, सर्विक्स एवं योनि का प्रोलैप्स (शरीर निकालना) की समस्या प्रसव पश्च्यात अधिक होती है परन्तु सर्विक्स एवं योनि का प्रोलैप्स (शरीर निकालना) ग्याभिन के आखिरी महीनों में तथा योनि एवं सर्विक्स का प्रोलैप्स कुछ प्रजातियों जैसे की गिर एवं राठी में मद काल के समय भी आ जाता है

कारण

- **प्रजाति:** जैसे कि कुछ प्रजातियों में प्रोलैप्स (शरीर निकालना) की समस्या ज्यादा होती है-राठी, गिर एवं भैंस
- **पोषण:** कमजोर पशुओं में प्रोलैप्स अधिक होता है।
- **उम्र:** अधिक उम्र के पशुओं में प्रोलैप्स अधिक होता है।
- **कैल्शियम की कमी** से भी प्रोलैप्स होने का खतरा अधिक होता है।
- **कठिन प्रसव:** यदि प्रसव के समय कठिनाई ज्यादा हो या बच्चा खींच कर निकालना पड़े तो प्रोलैप्स (शरीर निकालना) होने की संभावना बढ़ जाती है।
- **जर या आँव रुकने** पर या उसे खींच कर निकालने पर भी यह समस्या हो सकती है।
- **योनि मार्ग या गर्भाशय में संक्रमण** होने पर भी प्रोलैप्स होने की संभावना बढ़ जाती है।
- जिन पशुओं में बार बार यह समस्या होती है उनकी संतानों में भी यह समस्या होने की संभावना बढ़ जाती है।
- कब्ज होने पर भी जोर लगाने की वजह से प्रोलैप्स होने की संभावना बढ़ जाती है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

पेशाब की थैली में भी संक्रमण होने पर पेशाब करने के दौरान जोर लगाने की वजह से प्रोलैप्स होने की संभावना बढ़ जाती है।

लक्षण

योनि मार्ग से योनि भाग या सर्विक्स तथा बच्चेदानी का बाहर दिखना
बाहर गांठ के ऊपर गर्भाशय की गांठें भी दिखाई देती है जो कि शरीर निकालना या प्रोलैप्स की प्रमुख पहचान है।

बचाव

➢ज्यादा उम्र के पशुओं को नहीं रखा जाना चाहिए।

➢ पशुओं को उचित मात्रा में पोषण खासकर कैल्शियम दिया जाना चाहिए।

➢ जिन पशुओं में यह समस्या अकारण बार बार होती है उन्हें तथा उनकी संतान को भी नहीं रखा जाना चाहिए ।

➢ प्रसव के समय या उसके पश्च्यात किसी भी प्रकार की कठिनाई होने पर पशु चिकित्सक से ही इलाज कराया जाना चाहिए।

➢ बच्चेदानी के किसी भी भाग में संक्रमण होने पर चिकित्सक से उचित इलाज कराया जाना आवश्यक है।

➢ मूत्र एवं गोबर के किसी भी भाग में संक्रमण या अन्य प्रकार की परेशानी होने पर भी पशुचिकित्सक से संपर्क किया जाना चाहिए।

➢ प्रोलैप्स या शरीर के बाहर निकालना होने पर पशुचिकित्सक द्वारा उचित तरीके से बाहर आए भाग को अंदर करके ट्रश लगाकर या जरुरत पड़ने पर टांके लगाकर दोबारा बाहर आने से रोका जा सकता है।

➢ पशु के बैठने के स्थान को थोड़ा ढलान नुमा बनाया जा सकता है जिससे कि पिछला भाग थोड़ा ऊपर रहने से भी इस समस्या को कम किया जा सकता है।

➢ मादा को पर्याप्त मात्रा में हरा तथा सुपाच्य चारा तथा उपयुक्त मात्रा में ताजा साफ पानी खासकर गर्मी के मौसम में हर समय उपलब्ध रहना चाहिए ताकि कब्ज की समस्या ना हो।

➢ आखिरी के कुछ महीनों में चारे की मात्रा कम करके दाना बढ़ाने से पेट ज्यादा नहीं भरता जिससे बच्चेदानी में दबाव कम रहने से भी प्रोलैप्स होने की संभावना कम रहती है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

दूधारू पशुओं के लिए ग्रीष्मकालीन पोषण प्रबंधन और देखभाल

डॉ. प्रमोद कुमार सोनी

रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झाँसी

भारतीय उपमहाद्वीप की उष्णकटिबंधीय जलवायु को ध्यान में रखते हुए, भारत में दूधारू पशुओं के प्रबंधन में गर्मी का तनाव एक बड़ी समस्या है। गर्मी के तनाव से जुड़े सभी परिवर्तनों से उत्पादकता का नुकसान होता है, प्रजनन क्षमता में कमी आती है। हर साल गर्मी के दबाव के कारण दूध उत्पादन में कमी से हमारे देश में भारी वित्तीय नुकसान होता है।
हालांकि मवेशियों की देशी नस्लें अधिक ग्रीष्म सहिष्णु हैं, मवेशियों की क्रॉसब्रेड और विदेशी नस्लें गर्मी के तनाव के प्रतिअत्यधिक संवेदनशील हैं। भैंस अपनी काली त्वचा के कारण इसके लिए अधिक प्रवण होती है ।
आवास प्रबंधन एवं पोषण प्रबंधन से गर्मी के तनाव को कम किया जा सकता है।

गर्मी से तनावग्रस्त पशु के सामान्य लक्षणों में शामिल हैं-

- पशु छाया में चला जाता है।
- पानी का सेवन बढ़ना जबकि आहार का सेवन कम होना।
- लेटने के बजाय खड़े रहना पसंद करते हैं।
- श्वसन दर में वृद्धि और शरीर का तापमानबढ़ना।
- लार के उत्पादन में वृद्धि।
- खुले मुंह हाँफना।

पोषण प्रबंधन और देखभाल

➢गर्मियों के दौरान डेयरी पशुओं की उत्पादकता और दक्षता में भारी गिरावट आती है। चारा और देखभाल दो प्रमुख कारक हैं जिन्हें उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए प्रबंधित करने की आवश्यकता है।

➢गर्मियों के दौरान हरे चारे और तिलहन की उपलब्धता सीमित होती है जबकि कुछ क्षेत्रों में सूखा चारा बहुतायत में उपलब्ध हो सकता है लेकिन गुणवत्ता, पोषण मूल्य और पाचन शक्ति में खराब हो सकता है।

➢दूध उत्पादन और अधिक प्रभावी प्रजनन चक्र के लिए दुधारू पशुओं को किफायती भोजन और संतुलित राशन प्रदान करना आवश्यक है।

➢चारे और सांद्र को खिलाना कुल चारे के 70:30 के अनुपात में होना चाहिए।अनाज और खली के रूप में अतिरिक्त भोजन खिलाने की सलाह दी जाती है।

➢कुल मिश्रित राशन जैसे उच्च गुणवत्ता वाले फ़ीड प्रदान करें। पशु आहार की आवृत्ति बढ़ाएँ। जितना हो सके पशु आहार को ताजा रखें।

➢बायपास प्रोटीन का उपयोग दूध का उत्पादन और प्रोटीन की मात्रा को बढ़ा सकता है।

➢गर्मी के तनाव के दौरान जानवरों के लिए पर्याप्त ठंडे पानी का सेवन संभवतः सबसे महत्वपूर्ण रणनीति है।

➢गर्मियों की स्थिति में 35 प्रतिशत अतिरिक्त प्रोटीनयुक्त सांद्र मिश्रण खिलाने और दिन में 5 या 6 बार साफ और ठंडा पानी देने का सुझाव दिया जाता है।

➢भोजन पानी और प्रबंधन योजना को अचानक न बदलें। जानवरों को गर्म हवाओं से बचाने के लिए उपयुक्त आवास उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

पशुपालक मित्र

पशुपालन को समर्पित त्रिमासिक पत्रिका ISSN: 2583-0511 (Online)

लेख भेजने के लिए निर्देश :

1. लेख हिन्दी में मंगल फॉन्ट एवं microsoft word में होने चाहिये ।
2. लेख पशुपालन से संबन्धित होना चाहिये।
3. लेख में वैज्ञानिक या तकनीक शब्दों का कम से कम प्रयोग होना चाहिए ।
4. लेख की भाषा ऐसी होनी चाहिए कि पशुपालक को समझने में परेशानी न हो ।
5. लेख के प्रकाशन का निर्णय संपादक का होगा।
6. लेख का प्रकाशन निः शुल्क होगा ।
7. लेख को प्रकाशन के लिए ईमेल आई डी pashupalakmitra1@gmail.com पर भेजना होगा ।
8. लेखक को निम्न प्रारूप में एक स्वहस्ताक्षरित प्रमाण पत्र लेख के साथ सलग्न करना होगा **प्रमाणित किया जाता है कि संलग्न लेख...शीर्षक..... लेखक ...लेखक का नाम ..... द्वारा लिखित एक मौलिक, अप्रकाशित रचना है, तथा इसे प्रकाशन के लिए किसी अन्य पत्रिका में नही भेजा गया है।**
9. लेख में वर्णित सूचनाओं का दायित्व लेखक का होगा , संपादक का नही ।